



श्री नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री

पंच—गौरव कार्यक्रम जिला-पुस्तिका



जिला—बाड़मेर



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

थार नगरी

बाड़मेर

एक परिचय

बाड़मेर राजस्थान राज्य का दूसरा सबसे बड़ा जिला है। यह राजस्थान के $24^{\circ}58'$ से $26^{\circ}32'$ उत्तरी अक्षांश एवं $70^{\circ}5'$ से $72^{\circ}52'$ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। बाड़मेर जिले के उत्तर में जैसलमेर जिला, दक्षिण में सांचौर जिला, पूर्व में बालोतरा जिला तथा पश्चिमी सीमा पाकिस्तान से सटी हुई है। जिले की जलवायु शुष्क तथा यहां गर्मियों में अधिक गर्मी एवं सर्दियों में अधिक सर्दी रहती है। गर्मियों में यहां का तापमान 46 डिग्री तथा सर्दी में 5 डिग्री तक चला जाता है। यहां वर्षा का औसत 277 मिलीमीटर है। बाड़मेर शहर की स्थापना बहाड़ राव ने 13वीं शताब्दी में की थी। उन्हीं के नाम पर इस जगह का नाम बाड़मेर पड़ा यानि बहाड़ की पहाड़ी का किला। एक समय 'मालाणी' के नाम से जाना जाने वाला बाड़मेर अपनी जीवंतता के कारण सैलानियों को बहुत आकर्षित करता है। बाड़मेर जिले से 7 अगस्त, 2023 को बालोतरा उपखंड को अलग कर नया जिला बनाया गया। पुनर्गठित इस बाड़मेर जिले में कुल 8 उपखण्ड और 12 तहसीलें हैं, जिसमें बाड़मेर, बाड़मेर ग्रामीण, शिव, रामसर, गड़रारोड़, गुड़मालानी, धोरीमन्ना, चौहटन, सेड़वा, धनाऊ, नोखड़ा एवं बाटाडू हैं।

वर्तमान में जिले में 4 विधानसभा क्षेत्र (बाड़मेर, शिव, चौहटन, गुड़मलानी) हैं। लोकसभा क्षेत्र की दृष्टि से यह जिला बाड़मेर-जैसलमेर लोकसभा क्षेत्र में आता है। यह जिला सड़क और रेल मार्ग से जयपुर और दिल्ली से जुड़ा हुआ है। साथ ही जिले से भारतमाला प्रोजेक्ट के तहत बना जामनगर-अमृतसर एक्सप्रेस हाइवे भी निकल रहा है। यहां की अधिकतर आबादी पशुपालन और कृषि पर निर्भर है। बाड़मेर जिला कृषि एवं जलवायु के आधार पर शुष्क पश्चिमी मैदान के अन्तर्गत आता है। जिले की अधिकांश मृदा रेतीली है, जिसकी उर्वरा क्षमता बहुत कम है। जिले में जलवायीय परिस्थितियों व मृदा दशाओं के आधार पर फलदार पौधों में अनार, खजूर व बेर की खेती हो रही है। मसालों में जीरा, मैथी एवं औषधीय फसलों में ग्वारपाठा व ईसबगोल पर जोर दिया जा रहा है। यह जिला पर्यटन की दृष्टि से भी काफी समृद्ध है। जिले का प्रसिद्ध स्थल किराडू है, जिसे राजस्थान के खजुराहो के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही यहां बाड़मेर किला, बाड़मेर गढ़ मन्दिर, चिंतामणि पाश्वरनाथ जैन मंदिर, शिव मुण्डी महादेव मन्दिर, पीपला देवी, सती दक्षिणायनी देवी, महालक्ष्मी एवं गणेश मन्दिर, सोननाड़ी तालाब, महाबार धोरा, जसदेर नाड़ी, सफेद आकड़ा महादेव मन्दिर, किराडू जूना बाड़मेर, विरात्रा माता का मन्दिर, कपालेश्वर महादेव मन्दिर, कोटड़ा का किला, देवका सूर्य मन्दिर इत्यादि पर्यटन स्थल हैं। यह क्षेत्र देश के सबसे बड़े तेल और कोयला उत्पादक क्षेत्रों में से एक है। इसे भारत का दुबई कहा जाता है। राजस्थान के पश्चिमी रेगिस्तानी क्षेत्र का बाड़मेर जिला प्राकृतिक सम्पदाओं से समृद्ध है तथा

वर्तमान में राज्य ही नहीं बल्कि देश की प्रगति के योगदान में अग्रणी है। बाड़मेर में निकले तेल एवं गैस तथा लिम्नाइट के भण्डारों से बाड़मेर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने में सफल हुआ है। जिले में अक्षय उर्जा के क्षेत्र में भी काफी काम हुआ है। जिले में सोलर और विंड पावर के कई बड़े प्रोजेक्ट लगे हैं।

बाड़मेर लोक कला, संस्कृति, हस्तकला, परम्परागत मेले-त्योहार की दृष्टि से भी सम्पन्न है। बाड़मेर में कपड़े पर हाथ से रंगाई-छपाई, आरीतार, जूट पट्टी, गलीचा उद्योग, कांच-कशीदाकारी, ऊनी पट्टू एवं दरी बुनाई, लकड़ी पर नक्काशी का कार्य बेजोड़ है। बाड़मेर में निर्मित कलात्मक वस्तुओं ने अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में अपनी खास पहचान बनाई है।



बाड़मेर से करीब 20 किमी. दूर स्थित जूनापतरासर में प्राचीन शहर के अवशेष 12वीं एवं 13वीं शताब्दी के शिलालेख अवस्थित हैं। पहाड़ी पर प्राचीन किला, जिसकी परिधि 15 किलोमीटर के क्षेत्रफल में दिखाई देती है। यहां से विस्थापित होने के बाद लोगों ने मौजूदा शहर को अपना निवास स्थान बना लिया।



बाड़मेर के ऐतिहासिक तथा दर्शनीय पर्यटक स्थल



किराडू – बाड़मेर से 40 कि.मी. मुनाबाब मार्ग पर हाथमा गांव के पास किराडू एक ऐतिहासिक स्थल है। यहां 1161ई. काल का शिलालेख भग्नावेश में ब्रह्मा, विष्णु, शिव एवं सोमेश्वर भगवान के पाँच मन्दिर विद्यमान हैं। मन्दिरों के निर्माण में रामायण, महाभारत एवं अन्य पौराणिक कथाओं, देवी-देवताओं एवं जनजीवन का चित्रण पत्थरों पर बारीकी से उत्कीर्ण किया गया है। मन्दिर परिसर के आस-पास बिखरे पाषाण यहां प्राचीन नगर बसा होना प्रमाणित करते हैं। किराडू का प्राचीन नाम “किराटकूप” बताया जाता है। किराडू भारत-पाक अन्तर्राष्ट्रीय सीमा की तरफ होने से विदेशी पर्यटकों को वहां पहुँचने हेतु जिला प्रशासन से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है।

गढ़ मन्दिर – बाड़मेर शहर के पश्चिमी छोर पर 675 फीट ऊँची पहाड़ी पर 16वीं शताब्दी का प्राचीन गढ़ (छोटा किला) था, जिसे बाड़मेर गढ़ कहा जाता था, जिसके अवशेष आज भी विद्यमान हैं। इसी पहाड़ी पर प्राचीन देवी मन्दिर धार्मिक आस्था का प्रमुख स्थल है। देवी मन्दिर तक चढ़ने के लिए लगभग 500 सीढ़ियां निर्मित हैं। मन्दिर के प्रांगण से बाड़मेर का विहंगम दृश्य, आस-पास की पर्वत शृंखलाएं, मैदानी भाग एवं सुरम्य घाटियां दृष्टिगोचर होती हैं। पहाड़ी की सीढ़ियों के मार्ग पर ही नागणेची देवी का मन्दिर भी शक्ति उपासकों का प्रमुख स्थान है।

चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर – वांकल माता देवी की तलहटी में प्रारम्भिक सीढ़ियों के पास ही शहर के कोने पर 12वीं शताब्दी में निर्मित श्री पार्श्वनाथ जैन मन्दिर में शिल्पकला के अतिरिक्त काँच, जड़ाई का कार्य एवं चित्रकला दर्शनीय है। बारहवीं शताब्दी में निर्मित चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन मंदिर जैन तीर्थकर-पार्श्वनाथ को समर्पित है। इस मंदिर के अन्दर की मूर्तियां, आकर्षक तस्वीरें और सुन्दरता मन मोहने के लिए काफी हैं। मंदिर की भीतरी दीवारों पर मौजूद समृद्ध शीशों की दीवारें इसे सुन्दर बनाने के साथ यह एहसास कराती है कि इस मंदिर को बड़ी ही खूबसूरती के साथ बनाया गया था। स्टेशन रोड़ से सीधे बाजार होते हुए जैन मन्दिर तक पहुँचा जा सकता है।

शिव मुण्डी महादेव मन्दिर – बाड़मेर शहर के पश्चिमी भाग में स्थित सुरम्य पहाड़ियों में सबसे ऊँची छोटी पर स्थित प्राचीन शिव मन्दिर एक रमणीय एवं धार्मिक स्थल है। ऊँची पहाड़ी से शहर का विहंगम दृश्य, सूर्यास्त दर्शन एवं प्राकृतिक सौन्दर्य देखने योग्य है।

पीपला देवी, दक्षिणायनी देवी, महालक्ष्मी एवं गणेश मन्दिर – बाड़मेर की सुरम्य पहाड़ियों के मध्य घाटियों में निर्मित पीपला देवी, गणेश मन्दिर, महालक्ष्मी एवं दक्षिणायनी मन्दिर उपासना के साथ ही स्थानीय लोगों के लिए आमोद-प्रमोद हेतु रमणीक स्थल है। घाटी में स्थित जलकुण्ड के आस-पास पार्क निर्माण के साथ पर्यटक सुविधाओं का विकास भी किया जा रहा है।

सोननाड़ी तालाब – सुरम्य पहाड़ियों के मध्य में स्थित प्राचीन तालाब सोननाड़ी का निर्माण बाड़मेर नगर की स्थापना के साथ ही करवाया गया था, जो पूर्व में नगरीय जन जीवन के लिए पानी का एक मात्र स्रोत था। वर्तमान में नलों द्वारा जल वितरण की व्यवस्था होने से ऐतिहासिक तालाब की उपयोगिता एवं महत्व में कमी आई है। परम्परागत जल स्रोतों को पर्यटन हेतु रमणीक स्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है।

महाबार धोरा – बाड़मेर से 5 किलोमीटर दूर रेतीले धोरे, सूर्योदय एवं सूर्यास्त दर्शन एवं कैमल सवारी हेतु आकर्षक स्थल है।

जसदेर नाड़ी – बाड़मेर शहर से करीब 3 किलोमीटर दूर उत्तरलाई मार्ग पर स्थित प्राचीन कृत्रिम तालाब जसदेर नाड़ी का निर्माण बरसाती पानी को संग्रहित कर उपयोग में लेने हेतु करवाया गया था, जो आस-पास के गांवों के लिए प्रमुख जल स्रोत रहा है, जिसका उपयोग निरन्तर है, उसे पर्यटन स्थल के रूप में भी विकसित किया जा रहा है। यहाँ शिव शक्ति धाम मन्दिर स्थल रमणीय एवं उपासना का स्थल है।

सफेद आकड़ा महादेव मन्दिर – बाड़मेर से मात्र 3 किलोमीटर दूर सफेद आकड़ा महादेव मन्दिर स्थानीय निवासियों के लिए एक पिकनिक स्थल है।

जूना बाड़मेर – बाड़मेर से 40कि.मी. मुनाबाव मार्ग पर प्राचीन शहर के अवशेष 12वीं एवं 13वीं शताब्दी के शिलालेख, जैन मन्दिरों के स्तम्भ देखने को मिलते हैं। पहाड़ी पर प्राचीन किला, जिसकी परिधि 15 किलोमीटर के क्षेत्रफल में प्रतीत होती है।

विरात्रा माता का मन्दिर – बाड़मेर से लगभग 48 कि.मी. व चौहटन से 10 कि.मी. उत्तर दिशा में सुरम्य पहाड़ियों की घाटी में विरात्रा माता का मन्दिर है, जहां माघ माह व भादवा की शुक्ल पक्ष चौदस को मेले लगते हैं। मन्दिर के अलावा विभिन्न समाधि स्थल, जलकुण्ड व यात्रियों के विश्राम स्थल भी बने हुए हैं।

कपालेश्वर महादेव मन्दिर – बाड़मेर से 55 कि.मी. दूर चौहटन करबे की विशाल पहाड़ियों के मध्य 13वीं शताब्दी का कपालेश्वर महादेव मन्दिर शिल्पकला के लिए प्रसिद्ध है। इन्हीं पहाड़ियों में प्राचीन दुर्ग के अवशेष मौजूद हैं जिसे हापाकोट कहते हैं। किवदन्तियों के अनुसार पाण्डुवों ने अज्ञातवास का समय यही छिप कर बिताया था।

कोटड़ा का किला – बाड़मेर से 65 किलोमीटर दूर बाड़मेर-जैसलमेर मार्ग पर शिव करबे से 12 किलोमीटर रेगिस्तानी आंचल में बसे गांव कोटड़ा में छोटी पहाड़ी पर किला बना हुआ है। किले में पुरातत्व महत्व की सुन्दर कलाकृति युक्त मेड़ी व सरगला नामक कुंआ दर्शनीय है। कोटड़ा कभी जैन सम्प्रदाय का विशाल नगर था।

देवका सूर्य मन्दिर – बाड़मेर-जैसलमेर मार्ग पर स्थित गांव देवका से 1 कि.मी. पहले दाहिनी तरफ पुरातत्व महत्व के ऐतिहासिक मन्दिर प्राचीनतम प्रस्तरकला से परिपूर्ण है, जो भग्नावस्था में है, जिनका जीर्णोद्धार पुरातत्व विभाग द्वारा किया जा रहा है। यह एक

दर्शनीय स्मारक है। बाड़मेर—जैसलमेर मार्ग पर शिव में गरीबनाथ मन्दिर, ग्राम फतेहगढ़ में व ग्राम देवीकोट में छोटे किलेनुमा कोट प्राचीन भवन निर्माण कला के दर्शनीय स्थल हैं।



'पंच—गौरव' कार्यक्रम

1. प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंकरण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं। राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/ स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है। प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में "पंच—गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए "पंच गौरव" के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गये हैं।

2. कार्यक्रम के उद्देश्य

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।

4. जिलों के मध्य स्वरूप प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
5. प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
6. खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सुनिश्चित करना।
7. ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
8. सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/ असंतुलन को कम करना।

3. कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना

अ. नोडल विभाग

पंच गौरव कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग आयोजना विभाग है। राज्य स्तर पर एक जिला—एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला—एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला—एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला—एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेंगे।

ब. समन्वय

प्रत्येक जिले में जिला कलेक्टर इन 5 विभागों के साथ समन्वय बनाते हुए इस कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करवायेंगे। जिले का स्थानीय प्रशासन और विकास अधिकारी कार्यक्रम के कार्यान्वयन और प्रमाणिकता के मूल्यांकन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित मानदंडों के अनुरूप संचालित हों।

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु निम्नानुसार समिति का गठन किया गया है :—

क्र.सं.	अधिकारी का पदनाम	पद
1.	जिला कलेक्टर, बाड़मेर	अध्यक्ष
2.	उप वन संरक्षक, बाड़मेर	सदस्य
3.	कोषाधिकारी, बाड़मेर (राज. लेखा सेवा के अधिकारी)	सदस्य
4.	संयुक्त निदेशक, कृषि/उप निदेशक, उद्यानिकी विभाग, बाड़मेर	सदस्य
5.	महाप्रबन्धक, जिला उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, बाड़मेर	सदस्य
6.	उप निदेशक (एसीपी), सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, बाड़मेर	सदस्य
7.	सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग, जैसलमेर	सदस्य
8.	सहायक निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, बाड़मेर	सदस्य
9.	जिला खेल अधिकारी, बाड़मेर	सदस्य
10.	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, बाड़मेर	सदस्य सचिव

4. जिला स्तरीय समिति के कार्य

1. जिला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से जिला स्तरीय कार्य योजना एवं जिले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन करना।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु जिले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा करना।

- पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
- पंच गौरव-जिला पुस्तिका तैयार करना। समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

5. बजट (Resource Envelope)

अ. नोडल विभाग का बजट

राज्य स्तर पर एक जिला एक उपज के लिए कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, एक जिला एक वनस्पति प्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, एक जिला एक उत्पाद के लिए उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, एक जिला एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग तथा एक जिला एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल विभाग के रूप में कार्य करेंगे। संबंधित नोडल विभाग पंच गौरव कार्यक्रम के तहत जिले के विशेष घटकों के कार्यान्वयन के लिए अपने स्वयं के बजट का उपयोग करेंगे।

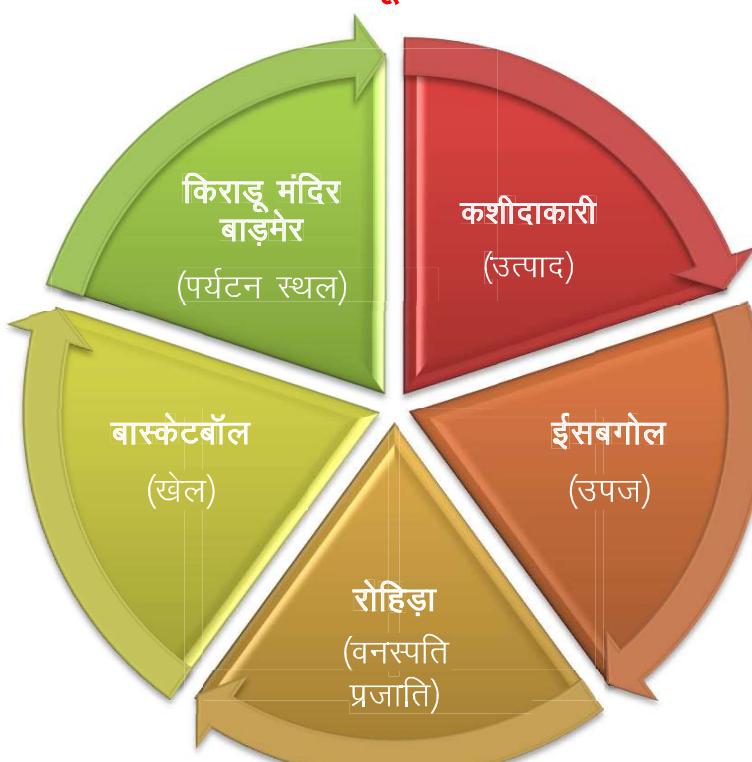
ब अभिसरण (Convergence)

विभागों की योजनाओं, नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से ही जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम की गतिविधियों का वित्त पोषण प्राथमिकता से किया जायेगा। जिला स्तर पर विभिन्न क्षेत्रों, योजनाओं और विभागों में उपलब्ध संसाधनों के अभिसरण से कार्य कराये जायेंगे। इसके अतिरिक्त MPLAD, MLALAD, संयुक्त राष्ट्र संगठनों अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों (IFIs) गैर सरकारी संगठनों, CSR फाउंडेशन, उद्योग संघों का सहयोग राजस्थान के जिलों में पंच गौरव कार्यक्रम के कार्यान्वयन को वित्त पोषित करेंगे।

स वित्त व्यवस्था

पंच गौरव कार्यक्रम के क्रियान्वयन के लिए प्रत्येक जिले को प्रति वर्ष अधिकतम राशि रूपये 5.00 करोड़ उपलब्ध कराई जाएगी। इस राशि का यथा संभव उपयोग पांचों चिह्नित गौरवों के लिए किये जाने के प्रयास किया जाना अपेक्षित है।

6. बाड़मेर जिले के चिह्नित पंच गौरव की सूची –



एक जिला एक पर्यटन स्थल – किराडू मंदिर



एक जिला – एक पर्यटन स्थल किराडू

बाड़मेर जिला मुख्यालय से करीब 40 किमी दूर स्थित किराडू के मंदिर पर्यटकों के लिए खासे आकर्षण के केन्द्र है। इसीलिए किराडू मंदिर को राजस्थान का खजुराहो कहा जाता है। दक्षिण भारतीय शैली में बना किराडू का मंदिर अपनी स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। पांच मंदिरों की श्रृंखला की कलात्मक बनावट देखने वालों को मोहित कर लेती है। 1161 ई.पूर्व इस स्थान का नाम किराट कूप था। करीब 1000 ई. में यहां पर पांच मंदिरों

हाथमा गाँव के पास एक पहाड़ी की तलहटी पर स्थित यह ऐतिहासिक स्थल मूल रूप से किरातकोट के नाम से जाना जाता था और 6वीं और 8वीं शताब्दी के बीच राजपूतों के किरात वंश द्वारा शासित था। वे शुरू में गुजरात के चालुक्यों के सामंती अधीनस्थ थे और यहाँ के मंदिरों की स्थापत्य शैली पर उनका प्रभाव बहुत अच्छी तरह से परिलक्षित होता है। किराडू पहले बाड़मेर का मुख्यालय था और 1140 ई0 में मोहम्मद गौरी द्वारा इस पर हमला कर मंदिरों और उनकी छवियों को नष्ट कर दिया था। एक किवदंती के अनुसार, गाँव को एक क्रोधित संत के श्राप के कारण नष्ट कर दिया गया था। कहा जाता है कि एक महान ऋषि ने एक बार किराडू का दौरा किया और कुछ समय के लिए अपने एक शिष्य को ग्रामीणों की देखभाल में छोड़ दिया। वापस लौटने पर उन्होंने पाया कि एक कुम्हार की पत्नी को छोड़कर, सभी ग्रामीणों ने उनके शिष्य की उपेक्षा की। क्रुद्ध ऋषि ने इस प्रकार गाँव को शाप दिया, लेकिन कुम्हार की पत्नी को जाने और इस शापित स्थल को देखने के लिए कभी पीछे मुड़कर नहीं देखने के लिए कहा। महिला ने अपनी जिज्ञासा में आखिरी बार अपने गाँव को देखने के लिए पीछे मुड़कर देखा और पत्थर में बदल गई। माना जाता है कि गाँव के बाहरी इलाके में जो मूर्ति है, वह वास्तव में कुम्हार की पत्नी है।

किराडू 12वीं शताब्दी में सोलंकी स्थापत्य शैली में निर्मित पांच भव्य मंदिरों के समूह के लिए प्रसिद्ध है। ये मंदिर अब खंडहर में पड़े हैं, लेकिन यहाँ की उत्कृष्ट मूर्तियाँ बीते युग की भव्यता को दर्शाती हैं और पुरातत्वविदों और कला प्रेमियों को आनन्दित करता है। यहाँ भगवान शिव को समर्पित चार मंदिर और भगवान विष्णु को समर्पित एक मंदिर है। बहु-स्तरीय शिखर वाला सोमेश्वर मंदिर समूह में सबसे प्रभावशाली और सबसे बड़ा है। यहाँ के मंदिरों के बाहरी भाग विभिन्न देवताओं, पौराणिक और खगोलीय पात्रों, कामुक आकृतियों, महाभारत और रामायण आदि के दृश्यों को दर्शाने वाली शानदार मूर्तियों से सुशोभित हैं और इस स्थान को प्रसिद्ध खजुराहो मंदिरों और कोणार्क (ओडिशा) में सूर्य

मंदिर के समान मंदिरों के कारण 'राजस्थान का खजुराहो' उपनाम मिला है। 1161 के मंदिर के शिलालेखों से पता चलता है कि इस स्थान को किरातकूप कहा जाता था और यह कभी परमारों की राजधानी था। अन्य शिलालेख राजा कुमारपाल सौलंकी, परमार राजा सिंधुराज और गुजरात के राजा भीमदेव के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं।

एक जिला – एक पर्यटन स्थल (किराडू मंदिर) के लिये प्रमुख कार्यों/परियोजना प्रस्ताव मय विवरण निम्नानुसार है –

1. किराडू मंदिर –

किराडू 11–12 वीं शताब्दी में एक समृद्ध नगरी थी, यहाँ के परमार एवं चौहान शासक गुजरात के सौलंकी राजाओं के अधीन थे। विदेशी आकान्ताओं के फलस्वरूप यह नगरी उजड़ गई। यहाँ पर 11 वीं शताब्दी ई0 में अनेक भव्य मंदिरों के निर्माण हुए, जो आज भी हमारे प्राचीन गौरव के प्रतीक हैं। वर्तमान में मरु गुर्जर शैली के मात्र पांच शैव-वैष्णव मंदिरों के भग्नावशेष ही अवशिष्ट हैं। यहाँ गर्भगृह, अन्तराल, महामण्डप तथा द्वारमण्डप प्रतिमाओं आदि से अलंकृत हैं।

2. पर्यटन सांख्यिकी –

यहाँ प्रतिवर्ष 5728 देशी-विदेशी पर्यटक इस स्थल में भ्रमण को आते हैं।

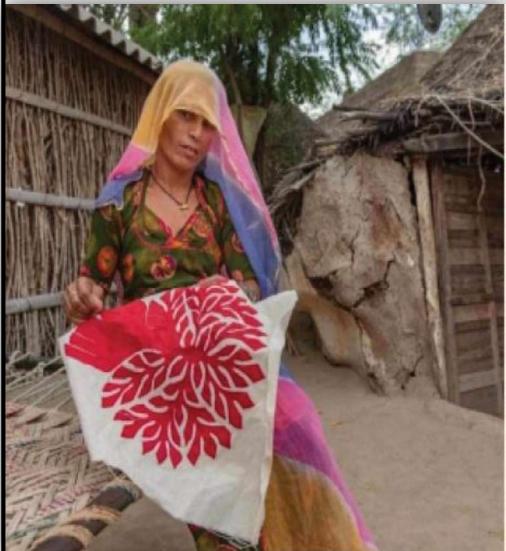
3. किराडू मंदिर को संरक्षित, सुव्यवस्थित एवं पर्यटन अनुकूल स्थल बनाने हेतु निम्नलिखित पर्यटन विकास कार्य प्रस्तावित है :-

- डिजिटल इन्टरप्रिटेशन सेंटर का निर्माण कार्य।
- अधिशेषित मूर्तियों को सुव्यवस्थित रूप ये प्रदर्शित करने हेतु हॉल का निर्माण कार्य।
- आधारभूत संरचना व सुविधाओं का कार्य।
- किराडू मंदिर की बाउण्डरी वाल को ऊँचा करवाने का कार्य।
- विलायती बबूलों को हटवाया जाना।
- बाड़मेर जिला मुख्यालय से किराडू तक विभिन्न स्थलों पर किराडू एवं उसकी दूरी को प्रदर्शित करने हेतु साईन बोर्ड लगवाना।



उपरोक्त कार्य योजना के क्रियान्वयन के लिए प्रस्तावित अनुमानित एवं पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित कुल व्यय— 150 लाख रु.

एक जिला एक उत्पाद – कशीदाकारी

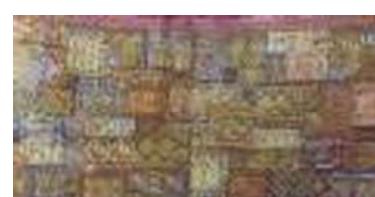


एक जिला – एक उत्पाद कशीदाकारी

बाड़मेर जिले में कशीदाकारी के काम ने हजारों महिलाओं को आर्थिक संबल प्रदान करने के साथ वैश्विक पहचान प्रदान की है। कशीदाकारी हस्तकला का एक पारंपरिक रूप है, जो कई पीढ़ियों से चली आ रही है। इस तरह की कढ़ाई का उपयोग शॉल, रुमाल, बेड कवर, कुशन और बैग को सजाने के लिए किया जाता है। फैब्रिंडिया, आइकिया और रंगसूत्र जैसे मशहूर ब्रांड कशीदाकारी एवं स्थानीय दस्तकारों से जुड़े हुए हैं। अब नित नए प्रोडक्ट एवं नई डिजाइनों के जरिए कशीदाकारी को नया लुक प्रदान किया जा रहा है। जो महिलाओं के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार का जरिया बना हआ है।

1. भूमिका –

राजस्थान के सीमावर्ती जिले बाड़मेर की कशीदाकारी कला अपनी बारीक कारीगरी, जीवंत रंगों और पारंपरिक डिजाइनों के लिए प्रसिद्ध है। एक जिला एक उत्पाद (ODOP) योजना के तहत, बाड़मेर की कशीदाकारी को विशेष उत्पाद के रूप में चुना गया है, ताकि इसे वैश्विक मंच पर पहचान मिल सके और स्थानीय कारीगरों को आर्थिक सशक्तिकरण प्राप्त हो।



2. बाड़मेर कशीदाकारी की विशेषता –

कशीदाकारी में मुख्यतः हाथ से की जाने वाली बुनाई, धागों से कलात्मक डिजाइन बनाना और रंगीन धागों से फूल-पत्तियों एवं पारंपरिक आकृतियों का चित्रण किया जाता है। इसमें मिरर वर्क (शीशे का काम), जरी, जरदोजी, रेशम और सूती धागों का उपयोग होता है। रंगों का तालमेल और बारीक सिलाई इसे आकर्षक बनाती है।

मुख्यतः शाल, ओढ़नी, बेडशीट, कुशन कवर, पर्दे, दुपह्ने और कुर्ते जैसे उत्पाद बनाए जाते हैं।

3. ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व –

कशीदाकारी कला का विकास राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ, जहाँ महिलाएँ इसे पारंपरिक रूप से सीखती एवं बनाती थीं। यह कला स्थानीय संस्कृति, लोककथाओं और जीवनशैली को भी दर्शाती है। कशीदाकारी में राजस्थान के ऊँट, मोर, हाथी, पुष्प और लोकजीवन से जुड़े चित्र उकेरे जाते हैं। यह कला शादियों और विशेष अवसरों पर पहनावों और सजावट में विशेष स्थान रखती है।



4. निर्माण प्रक्रिया –

(1). डिजाइन तैयार करना – पहले कपड़े पर चॉक या कलम से डिजाइन बनाया जाता है।

(2). धागों का चयन – रंगीन सूती, रेशमी और ऊनी धागे इस्तेमाल किए जाते हैं।





- (3). कशीदाकारी – हाथों या सिलाई मशीन से महीन टांकों के माध्यम से सिलाई की जाती है।
- (4). शीशे का काम – कपड़े में शीशे या मोती जड़े जाते हैं, जिससे उत्पाद और आकर्षक दिखता है।
- (5). फिनिशिंग – अतिरिक्त धागों को काटा जाता है और सफाई की जाती है।

5. कच्चा माल एवं औजार –

कच्चा माल – सूती कपड़ा, रेशम कपड़ा, ऊनी धागे, मोती, शीशे, सिक्किवन



औजार – कढ़ाई फ्रेम, सुई, कैंची, रंगीन धागे, सजावटी मोती

6. प्रमुख उत्पाद –

शाल, साड़ी, ओढ़नी, दुपट्ठा, बेडशीट, कुशन कवर, पर्द, वॉल हैंगिंग, बैग, टेबल कवर, कुर्त पारंपरिक परिधान और होम डेकोर उत्पाद

7. बाजार और मांग –

बाड़मेर की कशीदाकारी उत्पादों की मांग देश-विदेश में बढ़ रही है।



प्रमुख बाजार – राजस्थान के स्थानीय बाजार, दिल्ली हाट, हस्तशिल्प मेले, ऑनलाइन ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म (Amazon, Flipkart)

निर्यात – अमेरिका, यूरोप, यूके, दुबई आदि देशों में निर्यात की संभावनाएँ हैं।

8. वित्तीय सहायता और सरकारी योजनाएँ –

- हस्तशिल्पी (आर्टीजन) परिचय पत्र – राज्य में मार्च, 2016 से राज्य सरकार द्वारा संचालित आर्टीजन पंजीयन पोर्टल (www.sso.rajasthan.gov.in) के माध्यम से हस्तशिल्पियों का पंजीयन किया जा रहा है।

- शिल्पियों हेतु बाजार सहायता योजना – राज्य के कुशल शिल्पियों को राष्ट्रीय एवं स्थानीय हस्तशिल्प प्रदर्शनियों में भाग लेने पर दैनिक भत्ता, यात्रा भत्ता एवं स्टाल शुल्क में रियायत हेतु यह योजना राज्य सरकार द्वारा लागू की गई है। योजनान्तर्गत शिल्पी को द्वितीय श्रेणी का यात्री किराया एवं राज्य में प्रदर्शनी में भाग लेने पर 450 रुपये एवं राज्य से बाहर 600/- रु. प्रतिदिन दैनिक भत्ता देय है। स्टॉल शुल्क में 50 प्रतिशत रियायत अधिकतम 5,000/- रुपये तथा एक वित्तीय वर्ष में अधिकतम 25,000 प्रदान की जाती है।



- उत्पाद विविधीकरण योजना – योजनान्तर्गत राज्य सरकार के व्यय पर राज्य में कार्यरत बुनकरों को अन्य राज्यों में हाथकरघा इकाइयों के डिजाइन, नवीन तकनीकी उत्पादों एवं उत्पादन क्षमता के अध्ययन हेतु भेजा जाता है, जिससे राज्य के बुनकर अन्य राज्यों में उपयोग में ली जा रही नवीन तकनीकी, उत्पादों के विविधीकरण, डिजाईन विकास, हाथकरघा वस्त्रों के विपणन तथा अन्य राज्यों में संचालित हाथकरघा विकास की योजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें।



• एक जिला एक उत्पाद नीति—2024 —

1. एक जिला एक उत्पाद से संबंधित नवीन सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत (अधिकतम रु. 15 लाख) एवं लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत (अधिकतम रु. 20 लाख) तक पात्र परियोजना लागत पर मार्जिन मनी अनुदान सहायता।
2. उत्पादों के विपणन से संबंधित राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय आयोजनों में भाग लेने पर स्टॉल रेंट अनुदान व आवागमन हेतु अधिकतम 2 लाख रुपये तक की सहायता।
3. एकीकृत कलस्टर विकास योजना के तहत कॉमन फैसिलिटी सेंटर स्थापना हेतु सहायता।
4. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मानक प्रमाणन प्राप्ति तथा Intellectual Property Rights (IPR) हेतु व्यय पर 75 प्रतिशत (अधिकतम 3 लाख रुपये) तक की पुनर्भरण सहायता।
5. ओडीओपी एमएसएमई उद्यमों में ई—कॉमर्स के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु 2 साल तक प्लेटफार्म फीस का 75 प्रतिशत (अधिकतम 1,00,000 रुपये प्रतिवर्ष) तक पुनर्भरण।
6. ओडीओपी सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को भारत सरकार/राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों से उन्नत प्रौद्योगिकी/सॉफ्टवेयर अधिग्रहण हेतु किए गए व्यय पर 50 प्रतिशत (अधिकतम 05 लाख रुपये) तक की सहायता।
7. Cataloguing सेवाओं के लिए और/या पूरी तरह कार्यात्मक लेन—देन वाली ई—कॉमर्स वेबसाइट के विकास के लिए कुल व्यय पर 60 प्रतिशत (अधिकतम 75,000 रुपये) तक की एकमुश्त सहायता।
 - प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम – नवीन उद्यम स्थापित करने हेतु बैंक से ऋण लेने पर ग्रामीण क्षेत्र में 35% एवं शहरी क्षेत्र में 25% मे मार्जिन मनी सहायता
 - डॉ भीमराव अंबेडकर राजस्थान दलित आदिवासी उद्यम प्रोत्साहन योजना – अनुसूचित जाति एवं



अनुसूचित जनजाति वर्ग के उद्यमियों को व्यवसाय की स्थापना या विस्तार के लिए बैंक ऋण पर 25% तक मार्जिन मनी अनुदान एवं 9% तक ब्याज अनुदान दिया जाएगा।

9. व्यवसायिक अवसर एवं निर्यात संभावनाएँ:-

कशीदाकारी उत्पादों की मांग बढ़ने के कारण निर्यात का अच्छा अवसर है। नए उद्यमियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम एवं कौशल विकास के माध्यम से रोजगार बढ़ाने की संभावना। ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन बिक्री और वैशिक ग्राहकों तक पहुँच।

10. संपर्क जानकारी –

जिला उद्योग एवं वाणिज्य केंद्र, बाड़मेर

पता – रीको औद्योगिक क्षेत्र, प्रथम चरण, बाड़मेर

संपर्क नंबर – 02982–220320,220619

ईमेल – dicbarmer@rajasthan.gov.in

- कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ—
- उत्पाद ब्रांडिंग (डिस्प्ले वॉल, कॉफी टेबल बुक/कैटेलॉग का निर्माण, ब्राण्ड लोगो और टेगलाइन विकसित करना)
- जागरूकता कार्यक्रम (कंटेंट मार्केटिंग और स्टोरीटेलिंग, सोशल मीडिया द्वारा प्रचार)
- प्रशिक्षण एवं कौशल विकास (डिजाईन डवलपमेंट, तकनीकी उन्नयन, निर्यातकों का क्षमता निर्माण)
- पर्यटन प्रोत्साहन (जिले में एक व्हैल गार्डन की स्थापना, जहां उत्पाद की प्रदर्शनी और बिक्री के साथ-साथ पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके)
- कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु अनुमानित कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में)– 200 लाख रुपये



एक जिला एक उपज – इसबगोल



एक जिला – एक उपज ईसबगोल

इसबगोल उत्पादन में बाड़मेर जिला विशेष मायना रखता है। औषधीय गुणों से भरपूर इसबगोल प्लांटागो ओवाटा पौधे का बीज है। प्रदेश के बाड़मेर एवं जालोर जिले में इसबगोल का सर्वाधिक उत्पादन होता है। बाड़मेर जिले में करीब 1 लाख हैक्टेयर में इसबगोल की बुवाई होती है। किसान जीरे के साथ इसबगोल की फसल की बुवाई को लेकर खासी रुचि दिखा रहे हैं। उत्पादन के बाद इसबगोल को गुजरात में बेचा जाता है। इसका उपयोग विभिन्न प्रकार की औषधियों के निर्माण में किया जाता है। यह फसल बाड़मेर के किसानों को आर्थिक संबल प्रदान कर रही है।

इसबगोल एक झाड़ीनुमा पौधा है, जो कुछ-कुछ गेहूं के पौधे की तरह दिखता है। इसका वैज्ञानिक नाम प्लांटागो ओवाटा (*Plantago ovata*) है। इसके सिरों में गेहूं जैसी बालियां लगती हैं। इसके बीजों के ऊपर सफेद भूसी होती है, जिसे इसबगोल भूसी कहते हैं। स्वास्थ्य से जुड़ी कई समस्याओं के लिए इस इसबगोल की भूसी से लेकर इसकी पत्तियों और फूलों का इस्तेमाल किया जाता है।

इसबगोल (Isabgol) एक ऐसी जड़ी-बूटी है जिसे प्रकृति ने हमारे लिए एक वरदान के रूप में दिया है। इसे साइलियम हर्स्क (*Psyllium Husk*) के नाम से भी जाना जाता है। इसबगोल की उत्पत्ति भारत में हुई थी और इसका उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में हजारों वर्षों से किया जा रहा है। यह एक प्रकार का फाइबर है जो प्लांटेगो ओवाटा (*Plantago Ovata*) पौधे के बीजों से प्राप्त होता है। इसका उपयोग प्राचीन काल से ही आयुर्वेद में किया जा रहा है। इसकी फाइबर सामग्री इसे एक शक्तिशाली औषधि बनाती है।

इसकी विशेषता है कि यह न केवल पाचन को सुधारने में मदद करता है बल्कि यह अन्य कई स्वास्थ्य समस्याओं में भी लाभ प्रदान करती है। यह पौधा मुख्य रूप से भारत, ईरान और अन्य एशियाई देशों में उगाया जाता है। इसका नाम फारसी शब्द “इसबगोल” से लिया गया है जिसका अर्थ “घोड़े का कान” होता है क्योंकि इसके पत्ते इसी आकृति के होते हैं।

बाडमेर में ईसबगोल का बुवाई क्षैत्रफल एवं उत्पादन

क्र.सं.	वर्ष	बुवाई क्षेत्र (हेक्टेयर में)	उत्पादन (मैट्रिक टन में)
1	2020–21	129724	93401
2	2021–22	131353	90633
3	2022–23	152956	100645
4	2023–24	162782	112319

ईसबगोल के उत्पाद

ईसबगोल के पौधे में जब भूसी आ जाती है, तो पौधे को काटा जाता है। अगर मिट्टी में नमी हो, तो पौधे को जड़ से उखाड़ना होता है। इसके बाद ईसबगोल के पौधे को धूप में सुखाया जाता है। जब यह पौधा सूख जाता है, तो उसकी बालियों से ईसबगोल के बीज को अलग करते हैं। फिर भूसी और ईसबगोल के बीज की बाहरी परत को अलग करके इसे साफ किया जाता है। भूसी को अलग करने के लिए इसे 6 से 7 बार पीसा भी जाता है।

ईसबगोल के औषधीय गुण

स्वास्थ्य से जुड़ी कई समस्याओं के लिए ईसबगोल के फायदे देखे गए हैं। इसमें मौजूद पोषक तत्व और औषधीय गुण इसे सेहत के लिए लाभदायक बनाते हैं। ध्यान रहे कि ईसबगोल स्वास्थ्य से जुड़ी हुई समस्याओं से राहत दिलाने और बचाव में फायदेमंद हो सकता है, लेकिन यह गंभीर बीमारी का इलाज नहीं है।

1. कब्ज की समस्या के लिए :-

कब्ज लगभग 27 प्रतिशत आबादी को प्रभावित करता है। इससे राहत दिलाने में ईसबगोल मदद करता है। दरअसल, ईसबगोल में लैक्सेटिव प्रभाव होता है, जो मल निकासी की प्रक्रिया को आसान और तेज कर सकता है।

2. पाचन के लिए :-

एक स्वस्थ शरीर के लिए पाचन का ठीक रहना जरूरी है और ईसबगोल इसमें मदद करता है। ईसबगोल में लैक्सेटिव प्रभाव होता है। यह प्रभाव पाचन क्रिया को अच्छी तरह से कार्य करने में मदद करता है। इसके अलावा, ईसबगोल का उपयोग चिकित्सीय एजेंट के रूप में कब्ज, दस्त और इरिटेबल बाउल सिंड्रोम यानी आंतों से जुड़ी समस्या के घरेलू उपचार के लिए भी किया जाता है।

3. वजन घटाने और कोलेस्ट्रॉल संतुलन के लिए :-

वजन घटाने के लिए भी इसबगोल फायदेमंद होता है। इसमें मौजूद फाइबर के लाभ होते हैं। दरअसल, फाइबर युक्त आहार का सेवन करने से पेट लंबे समय तक भरा रहता है, जिससे अतिरिक्त भोजन करने की इच्छा कम होती है। इस प्रकार यह वजन को नियंत्रित करने का काम करता है। कोलेस्ट्रॉल के स्तर को संतुलित करने के लिए भी इसबगोल भूसी के लाभ होते हैं। परिणाम स्वरूप लोगों का टोटल और लो डैंसिटी लिपोप्रोटीन यानी हानिकारक कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम पाया गया है।

4. मधुमेह में लाभदायक :-

मधुमेह की स्थिति में खानपान पर ध्यान देना बहुत आवश्यक होता है, ताकि मधुमेह का जोखिम कम किया जा सके। इसबगोल में फाइबर होता है, जिससे मधुमेह की स्थिति को नियंत्रित करने में मदद मिलती है। सॉल्युबल फाइबर ग्लूकोज के अवशोषण को लगभग 12 प्रतिशत तक कम कर सकता है। इससे ब्लड शुगर की मात्रा को नियंत्रित रखने में मदद मिलती है।

5. हृदय स्वास्थ्य के लिए :-

हृदय स्वास्थ्य के लिए भी इसबगोल की भूसी में फायदे होते हैं। यह हृदय रोगों के खतरे को कम करता है। इसबगोल में फाइबर की अच्छी मात्रा होती है, जिस कारण इसका सेवन करने से सीरम कोलेस्ट्रॉल नियंत्रित रह सकता है। सीरम कोलेस्ट्रॉल बढ़ने से हृदय रोग का जोखिम कम होता है।

6. बवासीर के लिए :-

बवासीर की स्थिति में पीड़ित को मल त्याग के समय खून आने की समस्या के साथ दर्द भी होता है इस समस्या के लक्षण को कम करने में इसबगोल भूसी से लाभ होते हैं। दरअसल, इसबगोल भूसी का सेवन करने से इसमें मौजूद फाइबर बवासीर के दौरान होने वाले रक्तस्राव को कम करता है। इसी वजह से इसबगोल को बवासीर के लक्षण को कम करने में सहायक माना जाता है।

7. आंतों और उत्सर्जन प्रणाली की सुरक्षा के लिए :-

आंतों को स्वस्थ रखने के लिए भी इसबगोल खाने से फायदा होता है। इसबगोल का सेवन करने से आंत में पानी की मात्रा बढ़ती है, जिससे शौच में आसानी होती है। साथ ही इससे आंत का कार्य सामान्य रूप से चलता रहता है। इसके अलावा, उत्सर्जन प्रणाली को बेहतर रखने के लिए भी इसबगोल की भूसी फायदेमंद होती है। इसमें मौजूद फाइबर गैरिस्ट्रिक एसिड स्राव को कम करके पाचन तंत्र की रक्षा करता है। इसका सही मात्रा में सेवन किया जाए, तो यह गैरिस्ट्रिक की समस्या और अल्सर के जोखिम को कम करता है।

8. डायरिया और पेट की सफाई के लिए :-

डायरिया की स्थिति में भी इसबगोल खाने से फायदा होता है। इसबगोल खाने से शरीर में फाइबर की पूर्ति होगी, जिससे डायरिया होने का खतरा कई गुना तक कम होता है। इसबगोल के फायदे में कोलन (पेट) की सफाई को भी गिना जाता है। इसबगोल से आंत में पानी की मात्रा बढ़ती है, जिससे कॉलन साफ होता है और उसकी कार्यप्रणाली को बढ़ावा मिलता है।

इसबगोल के पौष्टिक तत्व

इसबगोल के पौष्टिक तत्वों को नीचे तालिका के माध्यम से दर्शाया जा रहा है:-

पोषक तत्व	मात्रा प्रति 100 ग्राम
ऊर्जा	375kcal
प्रोटीन	5.0g
कुल लिपिड (वसा)	6.25g
कार्बोहाइड्रेट	75.00g
फाइबर, कुल डाइटरी	10.0g
शुगर, कुल	30.00 g
कैल्शियम	50mg
आयरन	1.80mg
पोटेशियम	262mg
सोडियम	288mg
फैटी एसिड, टोटल सेचुरेटेड	2.500g

पंच गौरव कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियां –

कृषि विज्ञान केन्द्र, दांता व कृषि विज्ञान केन्द्र, गुडामालानी पर इसबगोल की खेती का प्रदर्शन मय अन्य गतिविधियां, एक दिवसीय किसान मेला एवं प्रदर्शनी, कृषकों का दो दिवसीय कृषक प्रशिक्षण, कृषकों को इसबगोल की खेती का भ्रमण/प्रशिक्षण कराने हेतू राज्य से बाहर भ्रमण/प्रशिक्षण, इसबगोल की उन्नत खेती की जानकारी के प्रचार-प्रसार हेतू बुकलेट/पम्पलेट वितरण कार्य-विक्रय सहकारी समिति/ग्राम सेवा सहकारी समिति के माध्यम से ईसबगोल की उन्नत किस्मों के कृषकों के खेत पर अनुदान भुगतान कर प्रदर्शन लगाया जाना।

पंच गौरव कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम से
प्रस्तावित व्यय (लाख रुपये में) – 100 लाख रुपये

ईसबगोल का पौधा मय खेत



ईसबगोल के बीज



ईसबगोल की भूसी



एक जिला एक प्रजाति – रोहिड़ा

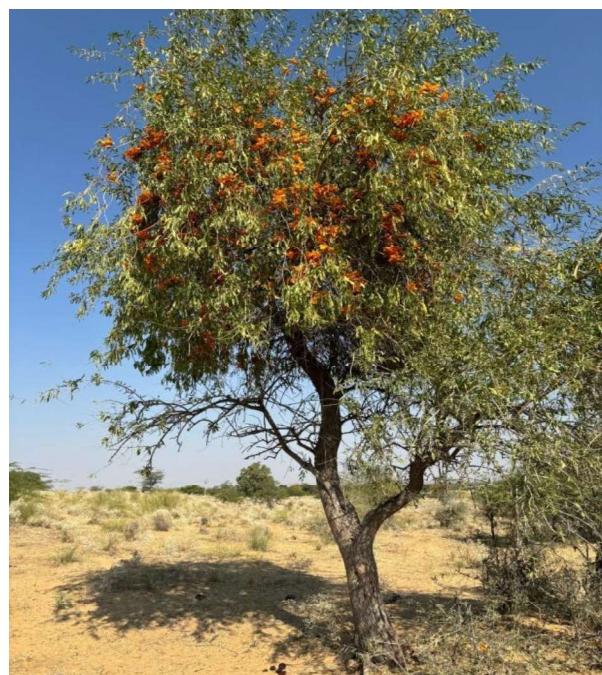


एक जिला – एक वानस्पतिक प्रजाति रोहिड़ा

बाड़मेर जिले के अधिकतर इलाकों में रोहिड़ा बहुतायत से पाया जाता है। इसका वानस्पतिक नाम टेकोमेला उंडुलता है। यह राजस्थान का राजकीय पुष्प भी है। इसको मारवाड़ टीक एवं रेगिस्तान का सागवान के नाम से भी पहचाना जाता है। इमारती लकड़ी के कारण इसका इस्तेमाल फर्नीचर बनाने में किया जाता है। शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में पाया जाने वाला रोहिड़ा वृक्ष पतझड़ प्रकार का है। रेत के धोरों के स्थिरीकरण के लिए यह वृक्ष बहुत

प्रस्तावना:

- रोहिड़ा वृक्ष, जिसका वैज्ञानिक नाम *Tecomella undulata* है, एक महत्वपूर्ण औषधीय और पारिस्थितिकीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण पेड़ है।
- यह वृक्ष गर्म और शुष्क जलवायु में पनपता है और इसकी लकड़ी का उपयोग निर्माण कार्यों, कृषि उपकरणों, और पारंपरिक चिकित्सा में भी होता है।



वृक्ष का जैविक महत्व:

- पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान:- रोहिड़ा वृक्ष पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। काफी कम वर्षा में भी पनपने के कारण, साल भर हरा रहने के कारण यह वन्यजीव एवं पक्षियों के प्रजनन के लिए जलवायु-स्थिर क्षेत्रों में उपयुक्त

आवास प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त आसपास के सूखम् जलवायु को नियंत्रित कर यह वृक्ष स्थानीय वनस्पति तथा घास को बढ़ावा देता है और जैव विविधता को बढ़ाने में सहायक होता है।

- मिट्टी का संरक्षण:- रोहिड़ा वृक्ष का मजबूत तंतु-मंडल मिट्टी के कटाव को रोकने और जमीन की उर्वरता बनाए रखने में मदद करता है।

स्वास्थ्य लाभ:

- रोहिड़ा वृक्ष की छाल, पत्तियाँ, और फूल आयुर्वेदिक चिकित्सा में प्रयोग होते हैं। इसके कुछ प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं:-
- मधुमेह का उपचार: यह रक्त शर्करा को नियंत्रित करने में मदद कर सकता है।
- घावों का इलाज: इसकी छाल और पत्तियाँ घावों को जल्दी भरने में सहायक होती हैं।
- सांस की समस्याएँ: यह श्वसन तंत्र के लिए भी लाभकारी है और जुकाम व खांसी से राहत दिलाने में सहायक है।



आर्थिक उपयोगिता

- रोहिड़ा की लकड़ी इमारती होने के कारण मकान एवं फर्नीचर बनाने में उपयोगी हैं।

- रोहिड़ा की लकड़ी पर दीमक, नमी एवं कीट पतंगों का प्रभाव नहीं होने के कारण काफी कीमती होती हैं तथा किसानों को आमदनी का साधन प्रदान करती हैं।
- रोहिड़ा के फूलों से हर्बल गुलाल बनाया जाता है।
- खेतों में मृदा संरक्षण, मिट्टी कटाव को रोकना एवं भू-जल का स्तर बढ़ाने में काफी महत्वपूर्ण योगदान देता है जिससे कृषि उपज में वृद्धि होती है।

संरक्षण रणनीतियाँ:

- गैर वन भूमि पर स्थित रोहिड़ा के पुराने वृक्षों को कटने से बचाने के लिये राज्य सरकार द्वारा नीतिगत निर्देश आवश्यक हैं।
- उत्तम क्वालिटी के रोहिड़ा पेड़ों की पहचान कर जिला स्तर पर सूची तैयार कर सीड बैंक बनाया जाना आवश्यक है।
- शुष्क और अर्द्ध शुष्क क्षेत्रों में वृक्ष का संवर्धन: उचित स्थानों पर रोहिड़ा वृक्षों के रोपण को बढ़ावा देना।
- स्थानीय समुदायों को जागरूक करना: स्थानीय समुदायों को इस वृक्ष के संरक्षण और इसके लाभों के बारे में जागरूक करना।
- मुख्यमंत्री बजट घोषणा अन्तर्गत हरियालो राजस्थान के तहत रोहिड़ा का अधिकाधिक पौधारोपण करना।



कार्ययोजना में प्रस्तावित प्रमुख कार्य/गतिविधियाँ :

क्र.सं.	गतिविधि का नाम	अनुमानित राशि (लाखों में)	विशेष विवरण
1	रोहिङ्गा के 1.00 लाख पौधे तैयार कर वितरण हेतु नर्सरी का अपग्रेडेशन	10.00	वर्मी कम्पोस्ट, पॉली बैग, खाद इत्यादि का क्रय, पक्का बेड निर्माण, बेंचेज, साईन बोर्ड इत्यादि
2	वन मित्रों को रोहिङ्गा वृक्ष के संवर्द्धन हेतु प्रशिक्षण देना	1.50	नई प्रौद्योगिकी, उन्नत वानिकी तकनीकों और नवीनतम पेकेज ऑफ प्रेविट्सेज के उपयोग से उपज और लाभ बढ़ाने के प्रयास के साथ प्रशिक्षण देना
3	रोहिङ्गा वृक्ष पर बुकलेट व पेम्पलेट वितरण	0.75	5000 पेम्पलेट व 500 बुकलेट का वितरण
4	स्मृति उद्यान हिल्ली में रोहिङ्गा वृक्ष के लिए एक दिवसीय मेला एवं उत्पादों की प्रदर्शनी	1.50	क्रेता विक्रेता बैठकों, प्रदर्शनियों आदि का आयोजन करके रोहिङ्गा की महत्वता की जानकारी देना
5	वृक्षारोपण कार्यक्रम: शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वृक्षारोपण अभियान चलाना।	0.50	स्थानीय शिक्षा और जागरूकता कार्यक्रम: लोगों को इस वृक्ष के लाभ और संरक्षण के महत्व के बारे में जागरूक करना।
6	संसाधन संकलन: रोहिङ्गा वृक्ष के विभिन्न भागों का सामुदायिक उपयोग और व्यापारिक उपयोग बढ़ाने के लिए संसाधन संकलन करना।	0.75	उत्पादों की जिओ-टेगिंग, प्रोडक्ट पेकेजिंग, ऑनलाईन एडवरटाईजिंग की सहायता से “एक जिला एक उत्पाद” को बढ़ावा देना।

कार्ययोजना के क्रियान्वयन हेतु कुल व्यय तथा पंच गौरव कार्यक्रम में
अनुमानित व्यय 15.00 (लाख रु. में)

एक जिला एक खेल – बास्केटबॉल



एक जिला – एक खेल बास्केटबॉल

बाड़मेर जिले के खिलाड़ियों के लिए बास्केटबॉल पसंदीदा खेल है। स्थानीय खिलाड़ियों ने बास्केटबाल की विभिन्न प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए कई पदक जीते हैं। जिला मुख्यालय पर खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देने के लिए विशेष इंतजाम किए गए हैं। बाड़मेर जिला मुख्यालय पर बास्केटबाल की राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का आयोजन हो चुका है।

बाड़मेर जिले में बास्केटबॉल खेल का समृद्ध इतिहास रहा है मारवाड़ क्षेत्र के युवाओं में गति कौशल व शारीरिक कद-काठी व क्षमता की अनुकूलता को देखते हुए बास्केटबॉल खेल हेतु खिलाड़ी भी बहुतायत में उपलब्ध है नियमित प्रशिक्षण एवं इस खेल हेतु आवश्यक आधार भूत ढांचा उपलब्ध होने से खिलाड़ियों की व्यक्तिगत खेल कौशल क्षमता में वृद्धि हो रही है एवं उनके प्रदर्शन में निरन्तर सुधार हो रहा है। बाड़मेर जिले के युवाओं ने बास्केटबॉल खेल में अन्तराष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है एवं मैडल प्राप्त किए हैं। वर्तमान में बाड़मेर जिले में 150 से अधिक खिलाड़ी इस खेल में नियमित प्रशिक्षण ले रहे हैं जिले में प्रति वर्ष सरकारी विद्यालयों एवं बास्केट-बॉल खेल संघ द्वारा जिला एवं राज्य स्तरीय बास्केटबॉल खेल प्रतियोगिताओं का नियमित आयोजन हो रहा है साथ ही राज्य स्तरीय बास्केटबॉल खेल प्रतियोगिता के भव्य आयोजन का बाड़मेर जिला साक्षी रहा है।

जिले की उपलब्धि –

बाड़मेर जिले में बास्केटबॉल खेल कि उल्लेखनीय उपलब्धियां रही हैं जो निम्नानुसार हैं—

- बाड़मेर जिले से अन्तराष्ट्रीय स्तर पर दो खिलाड़ी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर चुके हैं।
- राष्ट्रीय स्तर पर 30 से 40 खिलाड़ियों ने भाग लिया एवं पदक प्राप्त किया।



3. राज्य स्तर पर 200 से अधिक खिलाड़ियों ने बास्केट बॉल मे उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए बाडमेर जिला एवं राज्य को गौरवान्तित किया है।



संबंधित विभाग – युवा मामले व खेल विभाग (जिला खेल अधिकारी जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र – आदर्श स्टेडियम, बाडमेर
नोडल अधिकारी – जिला खेल अधिकारी बाडमेर

जिले में खेल मैदानों की उपलब्धता –

बाड़मेर जिला मुख्यालय पर सरकारी स्कूलों, कॉलेजों एवं खेल विभाग के पास 8 बास्केटबॉल खेल के मैदान हैं, जिसमें दो मैदान महात्मा गांधी सी. सै. विद्यालय, स्टेशन रोड, बाड़मेर पर फलड लाईट व्यवस्था सहित उपलब्ध हैं। ग्रामीण क्षेत्र में छाँक स्तर पर निजी एवं राजकीय विद्यालयों में बास्केटबॉल के खेल मैदान उपलब्ध हैं।

खेल प्रशिक्षण

बाड़मेर जिला मुख्यालय पर महात्मा गांधी सी. सै. विद्यालय, स्टेशन रोड, बाड़मेर पर पूर्ण सुविधाओं सहित दो मैदान उपलब्ध हैं। जहां पर नियमित सत्रों में लगभग 150 बालक/बालिकाओं को एक प्रशिक्षक द्वारा नियमित अभ्यास कराया जा रहा है साथ ही सीनियर स्तर के 20 खिलाड़ी विभिन्न मैदानों पर अभ्यास करते हैं एवं प्रशिक्षण का कार्य भी करते हैं।



जिले में पंच गौरव की अभिवृद्धि एवं सशक्तिकरण करने के लिए अनुमानित प्रस्ताव—

क्र. स.	प्रस्ताव	विवरण	राशि	विशेष विवरण / राशि लाखों में
1.	मानव संसाधन एवं क्षमता संवर्धन	1. ब्लॉक स्तर पर खेल प्रशिक्षकों की नियुक्ति जिला स्तर पर योग्यताधारी दो खेल प्रशिक्षकों की नियुक्ति	15000 x12 x12=21,60,000 20000 x2 x12= 4,80,000	21.60 04.80
2.	भौतिक कार्य करवाए जाने का विवरण	1. ब्लॉक / जिला स्तर पर बास्केटबॉल खेल मैदानों का निर्माण 2. खेल उपकरण क्रय करना	6x12 =72,00,000 2,00,000	72.00 02.00
3.	यदि कोई नवाचार प्रस्तावित हो तो उसका विवरण मय लागत	1. ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर (शहरी क्षेत्र में 21 दिवसीय) 2. खेल प्रतियोगिता का आयोजन ब्लॉक एवं जिला स्तर पर	(अल्पाहार एवं खेल पोशाक पर व्यय—2,00,000) (रुपये 5,00,000 आयोजन एवं भोजन व्यवस्था पर लागत)	02.00 05.00
4.	कुल व्यय मय विवरण	अनुमानित लागत	1,07,40,000	107.40

बाड़मेर जिले में एक जिला एक खेल में बास्केटबॉल को गौरव के रूप में स्थापित होने पर व्यापक रूप से इस खेल का जिले में प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर प्रचार-प्रसार हो सकेगा। जिले में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में इस खेल की अभूतपूर्व प्रतिभाएं उपलब्ध हैं प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर बास्केटबॉल खेल प्रशिक्षक, खेल सामग्री व खेल मैदान का निर्माण होने से बाड़मेर जिले के खिलाड़ियों द्वारा वर्ष पर्यन्त नियमित प्रशिक्षण प्राप्त करते हुए राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बाड़मेर जिला एवं राज्य तथा राष्ट्र का नाम गौरवान्वित करेंगे। इस प्रकार बाड़मेर जिले कि प्रत्येक प्रतिभा को पूर्ण रूप से तराशा जा सकेगा एवं बाड़मेर जिले का खिलाड़ी ओलम्पिक में प्रदर्शन के स्वर्ज को साकार कर सकेगा।